fayela (contrary ortenal ( contradiction ) परम्पराजात तर्कशास्त्र 7 प्रभार 7. callella

1) ate - 08/02/24 ASST. Profesor

Philosophy . Dr. Rajiv Ranjan Panday

Micclass - Parter off-1 tectoral class - 951-2

TDC 11 - सर्वटमायकता - 1

CBCS SOME MICH TROURDITA FARTELIANS

terposial Class - Daculation - 2

परम्परागत विरोध वर्ज

(Traditional square of opposition) Thursday

January 2015

<sup>।</sup> स्वतंत्र ध्यान १. तृत्य ध्यान ३. उपात्रितता या अह भाषादान 4. '34- 34 महीमता' या उपाणादान 5. विषयीत ६. अनुविपरीता किये। 01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 \*

क्रान्तित्व पूर्व ईश्वर का एक महत्वपूर्ण ताहिनक जुण सर्वद्यापकता है। इसका आश्राय है। वि ईश्वर सम्मी जगह विहुमान है। ईश्वर की पूर्णता एवं असीभितता कैं क्षिये उसका सर्वद्यापक हीना आवश्यक है परेन्तु देखर के सर्वद्यापक मानने में निम्न समस्यामें होजी

i) भरत व भेंगवान के बीच अंतर समाप्त हैं। जायेगा ii) विश्व में होने वासे परिवर्तन विकास एवं विनाश की ट्यारच्या नहीं हो पाती

iii) निकृष्ट वस्तुओं में भी उसकी विद्यमानता माननी पड़ेजी iv) ईन्नवर अभीतिक एवं अयारीरी हैं। ऐपी स्थिति में उनके सर्वेट्यापक होने की बात अबैग्धगम्य हो जातीही

(v) पाप व पुठम की व्याख्या नहीं हो पाती प्राधना बनाम निल्यता एवं द्यालुता

हमार्मिक ट्यामित ईश्वर की सार्थना करता है। यदि ईरपर् प्राचिना की खनकर वसके अनुक्रम कीर्द कदम उठाता है। तो बह परिवर्तनस्तित हैं। आयेगा, उनकी मिल्यता रवे डित है। आयेगी यादि वह प्राचैना की खनने के बाद आजड़बत बना रहता है। तो पिर्ध्राधिना बैकार ही जाती है। ईश्वर् की प्रभ द्याल रूप में स्वीकार करने पर भी प्रश्न धिन्ह उत्पन्न होने खेंबल लगता है।

सम्बद्धा है स्वर् की अवधारण। विशेष्टा भारते से युम्त है। या व्या मातित्व पूर्ण ईस्वर की अवधारणा विशेषात्ती ते युम्त है। देश्वर की व्याम्बलपूर्ण मानते पर कुद्द अन्य अमस्याये यदि देश्वर व्याम्बलपूर्ण ही तो विर वह स्वद संकल्प (Good will) रो अन्त हो जा। यभि देशपर सहार्तनक्ट भी ही तिहर असका कुद्द